कोरिया का गाँधीः चो मन सिक एवं महात्मा गॉधी

*डॉ. हंसकुमार शर्मा

शोध सारांश

1918 ई. से 1309 ई. तक कोर यू (KOR-YO)वंश का राज्य था, जिससे इस देश का नाम कोरिया रखा गया। भौगोलिक एवं सामरिक दृष्टि से चीन तथा जापान से इस देश का अधिक सम्पर्क रहा है। जापान निवासी इसे चोसेन कहते है। जिसका शाब्दिक अर्थ है, "सुबह ताजगी का देश" यह देश असंख्य बार बाह्य आक्रमणों में त्रस्त अनेक शताब्दियों तक राष्ट्रीय एकांतिकता की भावना अपनाना श्रेयस्कर माना। इस कारण इसे संसार में यती देश (Hermit Kingdom)कहा जाता रहा है।

अनेक शताब्दियों तक चीन का ही एक राज्य समझा जाता था, 1776 ई. जापान के साथ 'संधि सम्पर्क' तथा 1904 से 1905 ई. के रूस–जापान युद्ध के पश्चात् यह जापान का संरक्षित क्षेत्र, 22 अगस्त 1910 ई. को यह जापान का अंग जो द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जब जापान ने आत्म समर्पण किया तब 1945 ई. में याल्टा संधि के अनुसार 38 उत्तरी अक्षांश रेखा द्वारा इस देश को दो भागों में विभाजित का दिया गया जो द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के बाद कोरिया को दो हिस्सों में बांटने की प्रक्रिया शुरू हुई जर्मनी की तरह जिसमें यह तय हुआ कि कोरिया के दक्षिणी हिस्से में "कोरिया गणतंत्र" अमेरिका का प्रशासन एवं उत्तरी भाग में उत्तरी कोरिया "कोरियाई जनतंत्र" (Koren Peoples Democratic Republic)की स्थापना हुई। दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल जिसका क्षेत्रफल 98000 वर्ग किलोमीटर एवं उत्तरी भाग उत्तरी कोरिया की राजधानी पियांगयांग बनाई गई जिसे 1953 की पारस्परिक संधि के अनुसार 38 उत्तर अक्षांश का विभाजन मानकर 1,21,000 वर्ग किलोमीटर प्रस्तावित किया। जो सोवियत संघ 'रूस' द्वारा शासन पर रहेगा।

द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के बाद कोरिया को दो हिस्सों में बांटने की प्रक्रिया शुरू हुई। जिसमें ये तय हुआ कि कोरिया के दो हिस्सों में दो विचारधाराओं दक्षिणी हिस्से में अमेरिका का प्रशासन, व्यवस्था, प्रक्रिया व सुरक्षा की जिम्मेदारी रहेगी वहीं पर उत्तर कोरिया में उत्तरी भाग में प्रशासन सोवियत संघ (साम्यवादी) शासन प्रणाली की जिम्मेदारी रहेगी जहॉ चीन को हिस्सा नहीं दिया गया जबकि चीन द्वारा व्यापारिक हिस्सा सीमावर्ति होने के कारण 30 प्रतिशत एवं रूस द्वारा 60 प्रतिशत व्यापार एवं व्यावसायिक मार्ग प्रशस्त किया गया।

कोरियाई युद्धः–

शीत युद्ध के बाद बदलते शक्ति संतुलन के चलते अमेरिका ने सितम्बर, 1947 में कोरिया प्रशासन के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र संघ में उक्त मामला और 1948 में यू.एन. की महासभा कोरिया को गणतन्त्र की मान्यता दे दी गई। इसके बाद 1950 में शुरू होने वाले इतिहास के सबसे भयानक युद्धों में से एक माना जाता है जो कोरियाई युद्ध बंटबारे के साथ समाप्त हुआ। बटवारे के बाद भी दक्षिण कोरिया में गॉधी का महत्व व सिद्धान्त बरकरार रहा फिर ऐसा क्या हुआ कि उत्तर कोरिया में गॉधी का महत्व धीरे–धीरे नगण्य होता चला गया।

प्रोफेसर पंकज मोहन इस मुद्दे पर प्रकाश डालते हुए कहते है, "बंटवारे के बाद उत्तर कोरिया में वामपंथी विचारधारा का विकास हुआ तो वहीं दक्षिण कोरिया में 'लोकतांत्रिक विचारधारा का फैलाव हुआ। ऐसे में उत्तर कोरिया की विचारधारा से गाँधी के विचार मेल नहीं खाऐं और गॉधीवादी विचारधारा का मतत्व कम होता गया।"

कोरियाई महाद्वीप में था गाँधी का महत्वः–

जे.एन.यू. में कोरियाई विभाग की प्रोफेसर वैजयंती राघवन मानती है, ''1926 के दौरे में यह संभव था कि किम अल संग को गॉधी के विचारों से सहमति न हो क्योंकि उस दौरे में वह सोवियत संघ की रेड आर्मी द्वारा गुरिल्ला वॉर फेयर के लिए प्रशिक्षित किए जा रहे थे, लेकिन देश की बात करे तो ऐसा नहीं था, क्योंकि गॉधी जी का दुनिया भर में सम्मान हो रहा था, तो कोरियाई प्रायद्विप में भी गॉधी जी के विचारों व सिद्धान्तों का सम्मान किया जा रहा था।

उत्तर कोरिया ओर अमरीका के बीच जारी मिसाईल संकट के दौर में उत्तर कोरिया यानी डी.पी.आर.के. को एक तानाशाह देश के रूप में देखा जा रहा था। लेकिन डी.पी.आर.के. की स्थापना करने वाले संस्थापक **किम अल सुंग** मानते थे कि गॉधी के अहिंसा आन्दोलन से कोरियाई स्वाधीनता संग्राम को मदद मिली है जिसका उन्होंने अपनी पुस्तक ''विद द सेचूरी में लिखते है,'' मुझे इस बात का आश्चर्य हुआ कि कोरियाई प्रायद्विप के पहाडी गॉव में गॉधी की पूजा करने वाले वृद्ध भी है। उन्हें लगा इस वृद्ध व्यक्ति को किसी ने कोरियाई अखबार में छपा गॉधी का पत्र दिखाया है। इसके बाद से यह व्यक्ति अहिंसा से आजादी हासिल करने की बात को लोगों के बीच पहुँचा रहा है।''

कोरिया के बंटवारे के पूर्व अहिंसा सिद्धान्तः–

कम अल सुंग जिन्होने गॉधी विचारधारा का प्रचार–प्रसार हेतु जिलिन में रहते समय गॉधी का पत्र पढकर पार्क में सोसिस से अहिंसा के सिद्धान्त की आलोचना की थी उक्त समय में जिलिन में रहने वाले किसी भी युवा ने उक्त परिस्थितियों में विचाराधराओं को स्विकार नहीं किया क्योंकि उक्त काल में कोई मूर्ख नहीं था कि जापानी अंहिसा के रास्ते पर चलने से चॉदी की प्लेट में हमें आजादी दे देंगें, लेकिन इस विचारधारा से इतना फायदा जरूर हुआ कि हिंसक आन्दोलन ओर स्वाधिनता संग्राम छोड चुके कुछ राष्ट्रवादी नेताओं से हमें सहानुभूति और समर्थन रहा था।''

नालन्दा यूनिवर्सिटी के डीन, प्रोफेसर पंकज मोहन भी इस बारे में कहते थे, ''कोरियाई स्वाधीनता संग्राम गॉधी के विचारों से प्रभावित था, गॉधी की तरह उन्होंने भी असहयोग और स्वदेशी आन्दोलन शुरू किया इन आन्दोलनों के नेता चो मन सिक को कोरिया का गॉधी कहा जाता है। सिक गॉधी के विचारों से प्रभावित थे।''

कोरिया बटबारे के बाद–

25 जून, 1950 को उत्तरी कोरिया से दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण के साथ शीतयुद्ध काल में सबसे बडा व पहला संघर्ष था उत्तरी कोरिया जिसका समर्थन कम्यूनिष्ट सोवियत संघ तथा साम्यवादी चीन कर रहे थे दूसरी तरफ दक्षिणी कोरिया जिसकी रक्षा अमेरिका कर रहा था युद्ध अन्तिम निर्णय बिना समाप्त हुआ जिसमें जनक्षति तथा तनाव बहुत ज्यादा बढ गया, अन्तराष्ट्रीय नीति के विद्वान शूमाँ ने इसे ''सामूहिक सुरक्षा परीक्षण'' की संज्ञा दी सीमांकन में चीन व रूस जापान सागर, पूर्वी चीन सागर, पीला सागर **रीड की हड्डी** के समान जिसमे नुचें वंशानुगत अधिनायकवादी तानाशाही के तहत एकल पार्टी राज्य 09 दिसम्बर एवं 15 अगस्त 1948 को दक्षिण कोरिया स्वतंत्र घोषित रहा है।

प्रोफेसर पंकज मोहन बताते है, ''एक कोरियाई अखबार के सम्पादक किम संग सू ने गॉधी को पत्र लिखकर

कोरियाई लोगों को संदेश देने को कहा था जिसके जबाव में गॉधी ने एक लाईन में लिखा, मैं बस ये कह सकता हूँ कि मैं उम्मदी करता हूँ कि कोरिया अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए आजादी प्राप्त करेगा ये पत्र कोरियाई अखबार **डोंगा इल्बो** में उद्धत रहा है।''

कोरिया के गॉधी चो मन सिक का जन्म दक्षिणी प्योंगयोंग में हुआ था जो वर्तमान में उत्तर कोरिया की राजधानी है। द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के बाद दो गुट, के दो विचारधारा, दो संस्कृति में बांटने की प्रक्रिया शुरू हुई। उक्त काल परिस्थिति घटनाओं में राष्ट्रीय हित राबिन्सन के शब्दों मे, 'मार्मिक ओर दिर्घकालीन एंव तात्कालीन राष्ट्रीय हित जो किसी राष्ट्र के मूलभूत और अत्यन्त महत्वपूर्ण हित होते है उनमें राज्य कोई भी रियायत देने को तैयार न हो और जिनकी रक्षा के लिए युद्ध करने को भी तैयार रहते हो, मार्मिक हित राष्ट्रीय हित के सामने गौण हो जाते है।

राजनीतिक विचारधारा के अन्तर्गत राज्य, शासन और इन दोनों संस्थाओं के साथ व्यक्ति के सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से सम्बन्धित विचारधाराओं में राज्यों के वैदेशिक सम्बन्धों को निर्धारित करने वाले तत्वों का अध्ययन किया जाता है।

समस्त विचारधाराओं का केन्द्रीय तत्व मानव है। **फिलिस–डायल** के शब्दों में, "मनुष्य की प्रकृति तथा उसके कार्य, शेष विश्व से उसका सम्बन्ध जिसमें सम्पूर्ण जीवन का विवेचन अन्तर्निहित है, उक्त दोनों बातों की अन्तःक्रिया से उत्पन्न होने वाली मानव की अपने सहजातियों से सम्बन्ध की समस्या, यह अन्तिम समस्या ही राजदर्शन का मुख्य विषय है ओर इसके अन्दर राज्य की प्रकृति, उसका लक्ष्य का उसके कार्य समाविष्ठ है।"

उत्तर कोरिया के महात्मा गॉधी के सम्बद्ध के बारे में इतना ही कहा जा सकता है कि प्योंगयोंग गॉधीवादी नेता 'चो मनसिक' अहिंसा के सिद्धान्त के आधार पर जापान के खिलाफ आन्दोलन चला रहे थे उक्त समय वर्षो में 1939 से 1945 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान के पराजय परिणाम स्वरूप विचारधारा में कम्यूनिष्ट, साम्यवादी एवं लोकतांत्रिक को स्थापित करने के उद्देश्य से अमेरिका ने बम वर्षा के द्वारा पूरे शहर को उजाड दिया जिससे जापान पुनः शक्तिशाली राष्ट्र न बन सके लेकिन परिस्थितियां बदलते स्वरूप गॉधी विचारधारा प्रफुल्लित व प्रसपुटीत नहीं हो सकी क्योंकि दोनों राष्ट्र उत्तरी व दक्षिण कोरिया शुभचिंतकों पर आश्रित थे और वे मात्र किसी हद तक मात्र शतरंजी मोहरे थे। दो शक्तिशाली राष्ट्र सोवियत संघ (वारसा पैक्ट) एवं अमेरिका (नाटो) द्वारा साम्यवादी व पूँजीवाद का विस्तार एवं विचारधारा हेतु गुटबाजी कर रहे थे 27 जुलाई 1953 को 35 लाख प्राणी युद्ध में मृत्यु की आगोश में जिसमें 90 हजार सैनिक अमेरिका के सुरक्षा हेतु 10 लाख सैनिक 25 लाख आम नागरिक उक्त कोरिया युद्ध में खत्म हो गये एवं चीन जिसकी साम्यवादी विस्तारवादी नीति रही सोवियत संघ का सहयोग करते हुऐ संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थायी सदस्य ताईवान को हटाकर 25 अक्टूबर, 1971 को चीन के स्थायी सदस्य बना दिया और 240 कि.मी. सीमावर्ती सुरक्षा हेतु भूमी को रिक्त कराकर वर्तमान में 12 लाख सैनिक उत्तरी कोरिया में सीमा पर सुरक्षा कर रहे है वहीं पर दक्षिण कोरिया में 90 हजार सैनिक अमेरिका के स्थापित है। इसमें **पानुमुन्जोम** के पास जो पराजय हुई वह उत्तरी कोरिया में स्थापित है जिसमें लाखों लोग बेघर 50 हजार दक्षिण कोरिया के नागरिक बंदी एवं करीबन 35 लाख लोग वर्तमान तक बमबर्षक हथियारों से मृत्यु हो गई एवं भय आक्रान्त वर्तमान में मिसाईल परमाणु परीक्षण व नाभिकीय हाइड्रोजन बम बनाने में दिन प्रतिदिन राष्ट्र की प्रगति में अवरूद्धता को सिद्ध कर रही है। जो कोरिया स्वतन्त्रता हेतु अथक प्रयास कर रहा था वह गॉधीजी की तरह नयी सामाजिक व्यवस्था जो सबके लिए पूर्ण स्वतन्त्रता, समानता तथा न्याय को सुनिश्चित करे तथा जिसमें व्यक्ति की सत्ता के दूरूपयोग का, जहॉ भी हो अहिंसा व सतयाग्रहों के उपायों से प्रतिरोध करने में सक्षम हो इसका अनुभव करते हुऐ जीवन की स्थिति सदा अपने को पूर्णरूप में एक अप्राप्त और उप्राप्त आदर्श रहेगी।

गाँधीजी ने, 'मंजिल की अपेक्षा दिशा और परिपूर्णता के स्थान पर प्रक्रिया की ओर संकेत किया। अहिंसात्मक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप जो राज्य उत्पन्न होगा उसका ढांचा समन्वय या सामंजस्य पर आधारित होगा जो आदेश अहिंसात्मक समाज तथा मानव प्रवृत्ति के यथार्थो का मध्यम कार्य व मार्ग होगी।'

गाँधीवादी नेता चो मनसिक अहिंसा के सिद्धान्त के आधार पर जापान के खिलाफ आन्दोलन चला रहे थे जो वर्तमान में अब व्यांगयोंग को दुनिया में तानाशाह का प्रतिक माना जा रहा है। वह है नहीं उसे परिस्थिति व अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रतिद्वन्द्विता ने स्थापित कर दिया है।

***प्राचार्य**
श्री वीर तेजाजी महाविधालय,
राडावास (जयपुर)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. के.एस. भटनागर एवं आर.जी. गुप्ताः अर्वाचीन यूरोप, कालेज बुक डिपो,ग्वालियर 1988
2. दीनानाथ वर्मा : अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध, ज्ञानन्दा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
3. लूई फिशर : गाँधी एण्ड स्टालिन, न्यूयार्क, 1947
4. के.जी. मंश्रुवाला : गाँधी एण्ड मार्क्स, अहमदाबाद, 1956
5. शंकर घोष : दी वेस्टर्न इंपेक्ट ऑन इण्डियन पॉलिटिक्स, कलकत्ता, 1947
6. ऐलनबाल : आधुनिक राजनीति और शासन, मेकमिलन दिलली, 1963
7. बी.एल. फडिया : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य पब्लिकेशन, आगरा, 2000
8. न्यू पेपर, हिन्दू एवं राष्ट्रीय सहारा व अन्य।